

शुभा भयदई व मखु ज्वल परमेश्वरया महाउग्र
ते जशुयावचोदःह्मा महावीर जूयावीर ज्याकक्षा
॥ दकोसत्रु पूतकाववी ज्याकक्षयता कस्तोव पाठया
य ॥ १ ॥ श्री पुरंदरहे माभिनवकुलनाई श्वरं कृतं ॥ तदहं
सं प्रवशा मो आत्मारक्षा सता भवेत ॥ २ ॥ पादौ रक्षं
तु जीवो न्यजं धं यो लुचीवीक्रमः ॥ ३ ॥ उद्भ्यां कै सवोर

१२ ॥ शो त्कधाचैव जनार्दन ॥ ३ ॥ नाभोऽसू अचुतं रक्षं शु
ह्यतुवा प्रन सखा ॥ उदले पक्षे च हरो पृथे च रक्षतु ॥
४ ॥ धाम पार्चनं तौ वीरुदक्षो रोमधू सूदन ॥ बाहु ॥ १ ॥
भ्यां वा सुदेव च हृदयं च जनार्दन ॥ ५ ॥ कंठे रक्षं शु
वारह कृत्स्न च मुखं मंदले ॥ नाथ कौकने योरक्ष ह
षिके स श्मना सिके ॥ ६ ॥ नेत्रे नाशयने रक्षत ललाते

गं रुदं ध्यज ॥ कपाले केसवो रक्ष तैनेत्रे यतुरक्षत
॥ ७ ॥ धीन्सर्वगो रक्ष मे पुरुषोत्तम ॥ पुर्वेषु पुं
दरो काक्ष आशने त्रयो धर सखा ॥ ८ ॥ दक्षीने नारसी
हं च नैहृत्य तु दाता दार ॥ पुरुषोत्तम श्च वाहन्या वायुं
व्यापिनं त्वं हर ॥ ९ ॥ स नैव सर्वगो रक्ष मे पुण्यं विविक्तु
पंजरा ॥ वीरु पंजरा पुनः शोहं वीचर मिमं हतने

॥३॥ ॥ १० ॥ राजद्वारे पत्नी धीरे संग्रामे मनु संकते ॥ नदी
पुतरने चैव व्याघ्र चैव भयतथा ॥ ११ ॥ अग्निोदग्ध
जोपात्तेषु भुतग्रहनीवारनं ॥ दांकीनी सा कीनीने ॥ ३ ॥
य भुतप्रेत भयतथा ॥ १२ ॥ रक्षरक्ष माहादेव रक्ष
रक्ष महेश्वर ॥ रक्षंतु सर्वदेवानां प्रह्लावीसु महेश्वर
॥ १३ ॥ दीवारक्षतुमांसुर्यो रात्रौ रक्षतु चंद्रमा ॥ स्व